अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : प्रथम– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) जिन जीवों का शरीर प्रायः तिरछा-टेढा-मेढ़ा होता है, उन जीवों की गति को कहते हैं-
(क) मनुष्य गति (ख) तिर्यंच गति
(ग) नरक गति (घ) देव गति (ख)

(ii) निम्न से घाती कर्म है-
(क) वेदनीय (ख) नाम
(ग) गोत्र (घ) अन्तराय (घ)

(iii) जो अनादिकाल से मिथ्यात्वी है लेकिन सम्यक् पुरुषार्थ कर मोक्ष प्राप्ति की इच्छा रखते है, वह है-
(क) भवी (ख) अभवी
(ग) पडिवाई (घ) नारकी (क)

(iv) 'पानी में मछली का दृष्टांत' षट् द्रव्यों में किस द्रव्य का गुण है-
(क) काल द्रव्य (ख) आकाशास्तिकाय
(ग) धर्मास्तिकाय (घ) अधर्मास्तिकाय (ग)

(v) कौनसी लेश्या में जीव आचरण में वक्र व द्वेष करने वाला होता है-
(क) नील लेश्या (ख) कापोत लेश्या
(ग) कृष्ण लेश्या (घ) पद्म लेश्या (ख)

(vi) अरूपी अजीव के भेद होते हैं-
(क) 530 (ख) 560
(ग) 30 (घ) 100 (ग)

(vii) 'दुःखी जीवों के दुःखों को मिटाने इच्छा' है-
(क) सम (ख) निर्वेद
(ग) संवेग (घ) अनुकम्पा (घ)

(viii) समकित, 'धर्मरूपी आभूषणों की पेटी है।' 67 बोल में किसका भेद है-
(क) भावना (ख) स्थानक
(ग) यतना (घ) आगार (क)

(ix) व्रत अंगीकार करते समय रखी जाने वाली छूट को कहते हैं-
(क) प्रभावना (ख) भावना
(ग) आगार (घ) यतना (ग)

(x) विकृत श्रद्धा के निराकरण के प्रयत्न को कहते हैं-
(क) लक्षण (ख) दूषण
(ग) भूषण (घ) शुद्धि (घ)

(xi) निम्न में से सुपच्चक्खाण है-
(क) काया दण्डी (ख) अविरत
(ग) एकान्त बाल (घ) अक्रिय (घ)

(xii) अद्धा तप के भेद है-
(क) 10 (ख) 07
(ग) 02 (घ) 04 (क)

(xiii) 'बिना प्रयोजन के ही किसी पेड़ पर चढ़ जाना', संज्ञा है-
(क) लोक संज्ञा (ख) ओघ संज्ञा
(ग) क्रोध संज्ञा (घ) भय संज्ञा (ख)

(xiv) किस गति से आये हुए जीवों में लोभ व परिग्रह संज्ञा अधिक पायी जाती है-
(क) मनुष्य गति (ख) तिर्यंच गति
(ग) देवगति (घ) नरक गति (ग)

(xv) श्रवण का फल क्या है-
(क) दर्शन (ख) ज्ञान
(ग) पच्चक्खाण (घ) अनास्रव (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) 'बाईस परीषह विजय' संवर आराधना का साधन है। (हाँ)

(ii) विगय आदि रसों का सेवन करना रस परित्याग है। (नहीं)

(iii) वस्तु का यथार्थ श्रद्धान मिथ्यात्व है। (नहीं)

(iv) सचेतन पदार्थों से उत्पन्न होने वाले शब्द अजीव शब्द है। (नहीं)

(v) शंका निवारण हेतु तीर्थंकरों के पास गमनागमन की जो क्रिया होती है, वह आहारक काययोग है। (हाँ)

(vi) परिणमन करने की शक्ति को प्राण कहते हैं। (नहीं)

(vii) श्रद्धा के कारण पैदा होने वाली हृदय की कोमलता 'विनय' है। (हाँ)

(viii) सर्वज्ञ प्रणीत मत के सिवाय अन्यों के साथ सहवास, संलाप आदि करना परपाखण्डी प्रशंसा है। (नहीं)

(ix) शास्त्र के अनुसार कविता रचकर धर्म की उन्नति करना कवि प्रभावक है। (हाँ)

(x) सम्यक् दृष्टि के गुणों का वर्णन करना गुणग्राम है। (हाँ)

(xi) जो तप पहले करना था, वह किसी कारण से बाद में करे, वह 'अणागयं' है। (नहीं)

(xii) मनुष्य व तिर्यंच पंचेन्द्रिय को छोड़कर 22 दण्डक में एक अपच्चक्खाणी भंग ही पाया जाता है। (हाँ)

(xiii) आहार का दृश्य देखने से परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होती है। (नहीं)

(xiv) छल-कपट आदि की चेष्टा होना माया संज्ञा है। (हाँ)

(xv) अनास्रव का फल 'तप' है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 10x1=(10)

(i)	उदधिकुमार	(क) भूषण	भवनपति
(ii)	उपयोग गुण	(ख) भय संज्ञा	जीवास्तिकाय
(iii)	आत्मा की पुष्टि	(ग) सागार	पौषध
(iv)	सुरभिगंध	(घ) प्रभावना	घ्राणेन्द्रिय
(v)	मोक्ष की इच्छा	(च) सुपच्चक्खाण	संवेग
(vi)	चार तीथ की सेवा	(छ) जीवास्तिकाय	भूषण
(vii)	जैन धर्म की उन्नति	(ज) भवनपति	प्रभावना
(viii)	संवृत	(झ) पौषध	सुपच्चक्खाण
(ix)	आगार सहित	(य) घ्राणेन्द्रिय	सागार
(x)	अधीरता से	(र) संवेग	भय संज्ञा

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसकी स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की होती है। क्षीण मोहनीय गुणस्थान

(ii) मैं ऐसा कर्म हूँ, जिसके उदय से जीव की दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य में बाधा उत्पन्न होती है। अन्तराय कर्म

(iii) मेरा गुण नये को पुराना व पुराने को नष्ट करना है। काल द्रव्य

(iv) मैं ऐसा तत्त्व हूँ, जिसके कारण कर्म-पुद्गल आत्मा के साथ दूध-पानी अथवा लोहपिण्ड-अग्नि की तरह सम्बद्ध होते हैं। बन्ध तत्त्व

(v) मेरा अर्थ ग्रहण किये गये विषयों को अच्छा-बुरा मानकर उन पर राग-द्वेष करना है। विकार

(vi) मेरे द्वारा इन्द्रिय, मन की सहायता से रूपी-अरूपी पदार्थों का सीमित मात्रा में विशेष बोध होता है। मतिज्ञान

(vii) अनन्तानुबंधी कषाय का उदय न होना मेरा लक्षण है। सम
(viii) 'विविध विचारों से समकित में दृढ़ होना' मेरा अर्थ है। भावना
(ix) मैं सर्व उत्तरगुण का ऐसा भेद हूँ, जिसमें जो तप आगामी काल में करना है, वह पहले कर सकते हैं। अणागयं
(x) जो एकान्त पण्डित ज्ञानी है, उनके पच्चक्खाण कहलाते हैं? सुपच्चक्खाण
(xi) भूख लगना मेरे पैदा होने का कारण है। आहार संज्ञा
(xii) मैं एक ऐसी गति हूँ, जिसमें सबसे कम परिग्रह संज्ञा है। तिर्यंचगति
(xiii) मैं 'संयम' का फल हूँ। अनास्रव
(xiv) मैं 'अक्रिया' का फल हूँ। सिद्धि
(xv) मैं 'तप' का फल हूँ। वोदाण (कर्मों का नाश)

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) अकाम निर्जरा किसे कहते हैं ?

उ. मिथ्यात्व और अज्ञान के सद्भाव से होने वाली कर्मों की निर्जरा अकाम निर्जरा है।

(ii) नरकायु बंध के प्रथम दो कारण लिखिए।
1. महाआरंभ करने से 2. महापरिग्रह करने से

(iii) प्रतिसंलीनता तप को परिभाषित कीजीए।
इन्द्रियों को वश में करना, कषाय और योगों को रोकना।

(iv) यतना किसे कहते हैं ?
सम्यक्त्व रूपी अनमोल धन को मिथ्यात्व रूपी चोरों से बचाने के प्रयत्न को यतना कहते हैं।

(v) 'तपस्वी प्रभावक' का अर्थ क्या है ?
कठिन तपस्या करके धर्म की उन्नति करने वाला तपस्वी प्रभावक है।

(vi) 'जीव शुभाशुभ कर्मों का भोक्ता है', यह 67 बोल में किसका भेद है ?
स्थानक का।

(vii) देशमूलगुण पच्चक्खाण के भेद लिखिए।
स्थूल प्राणातिपात यावत् स्थूल परिग्रह का त्याग करना, पाँच अणुव्रत का पालन करना।

(viii) कोडीसहियं तप किसे कहते हैं ?
पूर्व तप का पारणा, नये तप का प्रारंभ 'कोडीसहियं' तप है।

(ix) विज्ञान का क्या फल है ?
विज्ञान का फल 'पच्चक्खाण' है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) भाषा पर्याप्ति किसे कहते हैं ?
जीव, भाषा योग्य सूक्ष्म पुद्गलों को गहण कर बोलने की योग्यता प्राप्त करे, वचनरूप में परिणत करे अर्थात् बोलने की शक्ति विशेष को 'भाषा पर्याप्ति' कहते हैं।

(ii) अघाती कर्म किसे कहते हैं ? उनके प्रकार लिखिए।
जो आत्मा के सामान्य गुणों को प्रभावित करके आत्मा को विकृत बना देते हैं, उन्हें अघाती कर्म कहते हैं। इसके चार भेद है- वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र।

(iii) निवृत्ति बादर गुणस्थान का दूसरा नाम क्या है ? इस गुणस्थान की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।
निवृत्ति बादर गुणस्थान का दूसरा नाम 'अपूर्वकरण गुणस्थान' है। इसकी जघन्य स्थिति-एक समय और उत्कृष्ट स्थिति-अन्तर्मूहूर्त होती है।

(iv) रसनेन्द्रिय के पाँच विषय एवं विकार लिखिए।
5 विषय- तीखा, कड़वा, कषैला, खट्टा, मीठा
60 विकार- 5 सचित्त, 5 अचित्त, 5 मिश्र, 15 शुभ, 15 अशुभ, 30 पर राग, 30 पर द्वेष

(v) श्रद्धान के प्रथम दो भेद लिखिए।
1. जीवादि नवतत्त्वों का परिचय करना।
2. नवतत्त्वों के स्वरूप को भलीभांति जानने वाले आचार्य आदि की सेवा करना।

(vi) भूषण किसे कहते हैं ? इसके प्रथम दो प्रकार लिखिए।
जिन प्रवृत्तियों से श्रद्धा में अधिक विशिष्टता आती है उसे भूषण कहते है।
1. जिन शासन में निपुण व कुशल होवें 2. जिन शासन की प्रभावना करे।

(vii) 'णिरवसेसं' व 'संकेयं' का अर्थ लिखिए।
णिरवसेसं- चारों प्रकार के आहार का त्याग करें, संथारा करे।
संकेय- मुष्टि आदि संकेतपूर्वक तप करे।

(viii) मैथुन संज्ञा की उत्पत्ति के चार कारण लिखिए।
1. शरीर की पुष्टता से 2. वेद मोहनीय कर्म के उदय से
3. मैथुन सम्बन्धी चिंतन करने से 4. मैथुन के दृश्य देखने से

(ix) सवणे-नाणे के प्रश्नोत्तर कितने हैं तथा ये कहाँ से लिए गये हैं ?
दस प्रश्नोत्तर है। ये भगवती सूत्र के दूसरे शतक के पाँचवें उद्देशक से लिये गये हैं।